B.Ed 2nd year

28/04/2020
Tuesday

समावेशी शिक्षा इकाई - 03

उपचारात्मक शिक्षण का संगठन

कक्षा शिक्षण

इस प्रकार की औपचारिक शिक्षण व्यवस्था में कक्षा के वर्तमान और संरचना में कोई परिवर्तन नहीं किया जाता है। शिक्षक को जब इस बात की जानकारी हो जाती है, कि विद्यार्थी विषय विशेष के किसी प्रकरण, विषयवस्तु, शिक्षण प्रक्रिया एवं अवधारणा आदि को समझने में कठिनाई अनुभव कर रहे हैं।

उपचारात्मक शिक्षण कक्षा के सभी विद्यार्थियों की एक समान अधिगम कठिनाइयों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ट्यूटोरियल शिक्षण

उपचारात्मक शिक्षण में ट्यूटोरियल शिक्षण विशेष लाभप्रद है। इसमें व्यक्तिगत (छात्रों की) समस्याओं एवं शिक्षण जटिलताओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसके मुख्य रूप निम्न हैं।

(1) समूहगत ट्यूटोरियल शिक्षण।
(2) वैयक्तिक ट्यूटोरियल शिक्षण।
(3) पर्यवेक्षित ट्यूटोरियल शिक्षण।

समूहगत ट्यूटोरियल शिक्षण

कक्षा के विद्यार्थियों को कुछ ऐसे समूह विशेष में विभक्त कर दिया जाता है, जिनकी विशेष विषय सम्बन्धी अधिगम कठिनाईयां, कमजोरियां एवं समस्याएं लगभग समान होती हैं।

प्रत्येक ट्यूटोरियल समूह का इन्चार्ज (प्रमुख) एक ट्यूटर होता है। तो विद्यार्थियों में से ही किसी होशियार विद्यार्थी द्वारा यह कार्य कराया जाता है।

इस तरह की शिक्षण व्यवस्था का मूल उद्देश्य ट्यूटोरियल समूह में सम्मिलित सभी विद्यार्थियों की एक समान अधिगम कठिनाईयों और कमजोरियों को सामूहिक रूप से हल किया जा सके।

(ii) वैयक्तिक ट्यूटोरियल शिक्षण

विद्यार्थियों को उनकी अधिगम कठिनाइयों और कमजोरियों के आधार पर शिक्षक द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अलग-2 वैयक्तिक मार्गदर्शन, वांछित सहायता, कोचिंग आदि प्रदान करने की व्यवस्था की जाती है ताकि विद्यार्थी की कठिनाइयों तथा कमजोरियों का निवारण किया जा सके।

(iii) पर्यवेक्षित ट्यूटोरियल शिक्षण

इस प्रकार की शिक्षण व्यवस्था के अन्तर्गत विद्यार्थी स्वयं के प्रयत्नों से अपने द्वारा अनुभव की जाने वाली अधिगम कठिनाइयों एवं कमजोरियों को दूर करने का प्रयास करते हैं।

"शिक्षक द्वारा प्रदान किया जाने वाला मार्गदर्शन या समस्या का पर्यवेक्षण सामूहिक या वैयक्तिक किसी भी प्रकार का हो सकता हैं।"

(3) स्व-अनुदेशित शिक्षण

पर्यवेक्षित शिक्षण व्यवस्था की भाँति स्व अनुदेशित शिक्षण व्यवस्था में विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार का मार्गदर्शन / पर्यवेक्षण प्राप्त नहीं होता हैं। विद्यार्थी स्व-अनुदेशन द्वारा ही अपनी कठिनाइयों एवं कमजोरियों को दूर करने का प्रयास करते है।

(4) अनौपचारिक शिक्षण

अनौपचारिक शिक्षणगतिविधियों को औपचारिक शिक्षा के साथ भली-भाँति जोड़ना। विद्यार्थी जिन बातों को कक्षा अध्ययन में नहीं समझ पाते, वे इन बातों को औपचारिक शिक्षण के माध्यम से वास्तविक एवं प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा आसानी से समझ जाते हैं।

B.R.C. Deoband
AMIS Pro - Sapna Tyagi

Scanned with CamScanner